IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दीनदयाल उपाध्याय के 'दार्शनिक विचार- मानव जीवन का समग्र सुख' का मूल्यांकन

***डॉ. अनिल कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, दादर आश्रम, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अपने दार्शनिक विचार के अंतर्गत मानव जीवन के समग्र सुख और कल्याण की बात करते हैं। उनका मानना है कि मानव जीवन का समग्र सुख तभी होगा जब वह शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा से खुश होगा। भारतीय संस्कृति मानव को समग्र रूप में देखती है। ऐसा कहा जाता है कि भारतीय दर्शन केवल आत्मा की बात करती है या आत्मिक सुख की बात करती है और पश्चात जगत केवल शरीर के सुख की बात करता है। दीनदयाल जी कहते हैं कि यह मानना कि भारतीय दर्शन केवल आत्मा के सुख की बात करता है, पूर्णतः गलत है। भारतीय दर्शन मानव के समग्र सुख की बात करता है अर्थात शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा के सुख की बात करता है। भारतीय दर्शन मानव को समग्र रूप में देखता है, समग्र रूप में अध्ययन करता है। भारतीय दर्शन मानव के सुख को एकात्मकता और समग्रता के रूप में देखता है। अगर हम शारीरिक रूप से खुश हैं परंतु आत्मिक खुश नहीं है तो हमें शाश्वत सुख की प्राप्ति नहीं होगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार मानव जब तक समग्र सुख प्राप्त नहीं करेगा तब तक उसका समग्र विकास भी नहीं होगा।

कुंजी शब्द- समग्र सुख, शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा, शाश्वत सुख, कल्याण, समग्रता, एकात्मकता, समग्र विकास।

एकात्म मानववाद के अंतर्गत पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानव का समग्र सुख संबंधित दार्शनिक विचार बहुत ही महत्वपूर्ण है।

मानव जीवन का समग्र सुख-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी समग्र सुख के अंतर्गत शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का सुख मानते हैं। दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार "मनुष्य समृद्धि के बाद भी सुखी नहीं रहता है। कहीं ना कहीं उसके जीवन पद्धति में मौलिक त्रुटि है। यह त्रुटि मनुष्य का पूर्ण विचार न करना है। हमारी संस्कृति मनुष्य का पूर्ण विचार करती है। मानव के प्रगति का अर्थ है शरीर ,मन ,बुद्धि और आत्मा इन चारों का प्रगति। बहुत बार ऐसा भी देखा गया है कि लोग समझते हैं कि भारतीय संस्कृति केवल 'आत्मा' की बात करती है ,शेष विचार नहीं करती है ,यह गलत है। पाश्चात्य जगत केवल 'शरीर' की बात करती है तो यह मान लिया गया कि भारतीय संस्कृति केवल 'आत्मा' की बात करती है जो की पूर्णतः गलत है। भारतीय संस्कृति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों के एकात्मकता और समग्रता की बात करती है।" भारतीय संस्कृति समग्रवादी है। जब मनुष्य समग्र रूप से सुखमय रहेगा तभी उसका समग्र विकास होगा।

शरीर

दीनदयाल उपाध्याय जी समग्र सुख के अंतर्गत पहले शरीर के सुख की बात करते हैं। शरीर को प्राप्त होने वाले सुख को शारीरिक सुख कहा जाता है। "शारीरिक सुख को इंद्रिजन्य सुख भी माना जाता है क्योंकि इंद्रियों से ही इसका उपभोग किया जाता है। ऐसे सुख मनुष्य के साथ-साथ अन्य प्राणियों में भी होते है ,जैसे आहार ,निद्रा ,भय ,मैथन आदि। यह सुख पशु और मानव में समान रूप से देखने को मिलती है ,बस अंतर यह होता है कि मनुष्य का कुछ ना कुछ जीवन का लक्ष्य होता है परंतु पशुओं का नहीं। लक्ष्य विहीन मनुष्य पशु के समान होता है। इंद्रियों के सहयोग से प्राप्त होने वाले सुख को मानव के लिए राजस सुख माना जाता है।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मत है कि ऐसी सामाजिक व्यवस्था होनी चाहिए जिसमे मनुष्य के मानसिक ,बौद्धिक एवं आत्मिक सुख को तो ध्यान में रखा ही जाय और साथ ही साथ शारीरिक सुख प्रदान करने के साधन भी उपलब्ध कराया जाय।

मन

शारीरिक सुख तो क्षणभंगुर एवं अपूर्ण होती है। मनुष्य के लिए उसके मन का सुखी होना सबसे महत्वपूर्ण है, उसके मन का प्रसन्न चित्त होना बहुत जरुरी है। मन के सुख को ही मानसिक सुख कहा जाता है। मनुष्य के पास एक विकसित बुद्धि होता है जिससे वह चिंतन और मनन करता है। हमारा मस्तिष्क क्षणिक और शाश्वत सुख में अंतर समझता है। मनुष्य को केवल भोजन ही नहीं चाहिए बल्कि स्वाभिमान और स्नेह पूर्ण ढंग से भोजन चाहिए अर्थात मनुष्य को शारीरिक सुख के साथ मानसिक सुख भी चाहिए। व्यक्ति को आप भोजन दे दीजिए और साथ-साथ उसको बेइज्जत भी करिए ,तो क्या होगा? व्यक्ति का शरीर तो शान्त रहेगा परन्तु उसका मन आहत होगा अर्थात दुःखी और अशांत होगा। व्यक्ति को तो आप शारीरिक सुख तो दिए परन्तु मानसिक सुख नही दे पाए ,क्या ऐसी स्थिति में मानव सुख और कल्याण प्राप्त कर पायेगा? नही कर पायेगा। अतः मानव के सुखमय जीवन के लिए शारीरिक और मानसिक दोनों सुख बहुत जरुरी है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते है "मन बहुत चंचल होता है। उस पर विवेक का अनुशासन चाहिए, अन्यथा वह आवारा बन जाता है।"

बुद्धि

मनुष्य का मन बहुत चंचल होता है। यह हमेशा भागता रहता है। जब से मनुष्य मन को वश में नहीं करेगा अपने उद्देश्य की ओर नहीं बढ़ पाएगा। मनुष्य अपने बुद्धि से ही मन को वश में रख सकता है।

अतः मनुष्य को बुद्धि के सुख की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इस सन्दर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते हैं: "यदि मन का सुख हुआ भी और आपको बड़े प्रेम से रखा भी तथा आपको खाने पीने को भी प्रचुर मात्रा में दिया ,परंतु यदि मस्तिष्क में कोई उलझन बैठी है तो वैसी हालत होती है जैसे पागलों की हो जाती है। पागल का क्या होता है? उसे खाने को पर्याप्त मिलता है ,हृष्ट पुष्ट भी हो जाता है ,अन्य सुविधाएं भी मिलती है ,परंतु मस्तिष्क की उलझन के कारण बुद्धि का सुख प्राप्त नहीं करता। बुद्धि में भी तो शांति चाहिए।"

इस प्रकार देखा जाए तो व्यक्ति को मानसिक सुखी के साथ बौद्धिक सुखी भी होना चाहिए। यदि व्यक्ति मानसिक रूप से सुख में है परंतु उसका बुद्धि शान्त या सुखी नही है तो व्यक्ति सुखी नही रह सकता। व्यक्ति को बुद्धि के सुख के बिना उसके मन के सुख का कोई अर्थ नही है। व्यक्ति के सुख के लिए मन और बुद्धि दोनों का सुखमय होना जरूरी है।

आत्मा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी बुद्धि के सुख को भी अंतिम सुख नहीं मानते है। मनुष्य के शाश्वत सुख के लिए बुद्धि के सुख से भी ज्यादा महत्वपूर्ण सुख आत्मा के सुख को बताते हैं। जब मनुष्य भयमुक्त और स्वार्थ मुक्त हो जाता है तो उससे उसे आनंद की प्राप्ती होती है। यह आनंद ही आत्मिक सुख है। वस्तुत आध्यात्मिक सुख को परमानन्द कहा जाता है। जब व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना विशाल हो जाए कि वह पराएपन के भाव, जलन का

भाव, ईर्ष्या-द्वेष, मोह-माया, लड़ाई-झगड़ा के भाव से ऊपर उठ जाए तो इससे मिलने वाला आनंद ही परमानन्द है, आध्यात्मिक आनन्द है अर्थात व्यक्ति का आत्मा सुखमय हो जाता है। उसे आत्मिक सुख मिलता है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि यदि व्यक्ति को शारीरिक सुख मिले परंतु आत्मिक सुख ना मिले तब भी वह शाश्वत सुख नहीं हो पाएगा और आत्मिक सुख मिले परंतु शारीरिक सुख ना मिले तब भी शाश्वत सुख नहीं होगा।

जैसा की पाश्चात्य देशो में होता है कि वह केवल शरीर और शारीरिक सुख के विषय में सोचते हैं आत्मा या आत्मा के सुख के विषय में नहीं, परन्तु भारतीय दर्शन समग्रता व एकात्मकता की बात करता है।

यदि मानव का शाश्वत सुख, कल्याण और समग्र विकास करना है तो हर हाल में उसको शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक सुख प्रदान करना ही होगा। अगर किसी भी एक सुख का अभाव होगा तो मानव का समग्र विकास नहीं हो पाएगा। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि इनमें समन्वय स्थापित किया जाय, इनका समग्र और एकात्म विचार किया जाय।

वर्तमान में जिस तरह मनुष्य शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक परेशान हैं, उसे आत्मिक सुख कैसे प्राप्त होगा? इस संदर्भ में मानव का समग्र सुख रूपी दार्शनिक विचार बहुत प्रासंगिक हो जाता है।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1960). राष्ट्रजीवन की समस्याएं. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.
3. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1989). हिन्दू संस्कृति की विशेषता. गाज़ियाबाद: जागृति प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. गुप्त, बजरंग लाल (2019). राष्ट्र दृष्टि. प्रयागराज: संपादक- डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, अरुंधति वशिष्ठ अनुसंधान पीठ.

8. गुप्त, बजरंग लाल (2017). भारतीय अस्मिता की निरंतरता. प्रयागराज: संपादक- डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, अरुंधति वशिष्ठ अनुसंधान पीठ.

9. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

10. गुप्त, बजरंग लाल (2010). एकात्म दृष्टि- भारत का भविष्य. प्रयागराज: संपादक- डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, अरुंधति वशिष्ठ अनुसंधान पीठ.

11. शर्मा, महेश चंद्र (1994). दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार. नई दिल्ली: वसुधा पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.

12. जोशी, मुरली मनोहर (1991). दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति और विचार. उत्तर प्रदेश संदेश, अंक- 9.

13. गोपाल, कृष्ण (2019). राष्ट्र का राजनीतिक प्रबोधन और एकात्म मानव दर्शन. पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति और व्यक्तित्व खण्ड - 1, प्रयागराज: संपादक- डॉ. जितेंद्र कुमार संजय और डॉ. इंद्र कुमार ठाकुर, साहित्य भंडार.

14. नेने, विनायक वासुदेव (1986). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड- 2 एकात्म मानव दर्शन. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.